# मेरा स्कूल

जब मुझे अपने दोस्तों से पता चला कि अच्छे और मशहूर स्कूलों में पढ़ने के बाद भी वे खुश नहीं हैं तो मैंने सोचा क्यों न मैं अपने स्कूल के बारे में लिखूँ। मेरे दोस्तोंके टीचर उनसे अच्छा बर्ताव नहीं करते हैं। बहुत सारा होमवर्क देते हैं। उन्हें कई सारी चीज़ें गलत पढ़ाई जाती हैं। टीचर बच्चों की बात नहीं सुनते हैं। जब तक टीचर ना चाहें बच्चे क्लास में बोल नहीं सकते हैं। जब मैं प्राइवेट स्कूल में पढ़ता था तो मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही होता था। टीचर बच्चों के बाल खींचते, हाथों-डण्डे से पिटाई करते, घुटनों के बल खड़ा कर देते या फिर धूप में खड़ा कर देते।

पहले मैं जिस स्कूल में पढ़ता था वहाँ मेरी मम्मी भी पढ़ाती थीं। पर, मेरे पापा के एक्सीडेंट के बाद मैंने पास के सरकारी स्कूल में ही एडमिशन ले लिया। मेरा स्कूल मजितार (पूर्वी सिक्किम) में हिमालय की वादियों में है। तीस्ता नदी की घाटी में। जब मैं स्कूल की खिड़की से देखता हूँ तो चारों ओर हरे-भरे हिमालय पर्वत दिखते हैं। मुझे घेरे हुए, मेरी रक्षा करते हुए। मेरे स्कूल के एक ओर गंगटोक जाने वाला 34 ए राष्ट्रीय राजमार्ग है और दूसरी ओर तीस्ता नदी की ओर जाने वाली ढलान है। वहाँ घना जंगल है। कभी-कभी हम जंगल में जाते हैं। वहाँ कोयल, कठफोड़वा, भुजंगा जैसे पक्षियों के अलावा सुअर, हिरण भी दिख जाते हैं। कुछ बच्चे कहते हैं कि वहाँ सिक्किम का राज्य पशु लाल पाण्डा भी है। हम जंगल में ज़्यादा अन्दर नहीं जाते हैं। वहाँ एक ऐसी जगह भी है जहाँ खड़े होकर हमेशा ठण्डी हवा बहती महसूस की जा सकती है। मेरे स्कूल में न चारदीवारी है न कोई बड़ा-सा गेट। आसपास के गाँवों के लोग वहाँ फल वगैरह लाते हैं।

मैंने पिछले साल ही इस स्कूल में एडमीशन लिया था। बड़ा पुराना स्कूल है यह। मेरी माँ की उम्र से दो साल कम है इसकी उम्र। मेरे टीचर बहुत अच्छे हैं। अच्छे से पढ़ाते हैं। चुटकुले, पहेलियाँ भी सुनाते हैं। हम गलती कर दें तो मारते भी नहीं हैं। शैतान बच्चों की कभी पिटाई ज़रूर हो जाती है। मैं अपना बहुत-सा होमवर्क स्कूल में ही कर लेता हूँ। इसलिए मुझे चित्र बनाने व केसियो बजाने के लिए काफी समय मिल जाता है। मेरे स्कूल के दोस्तों के पास बहुत सारे खिलौने नहीं हैं पर वे कागज़ से कई तरह के खिलौने बनाना जानते हैं। हम उन्हीं खिलौनों से खेलते हैं।

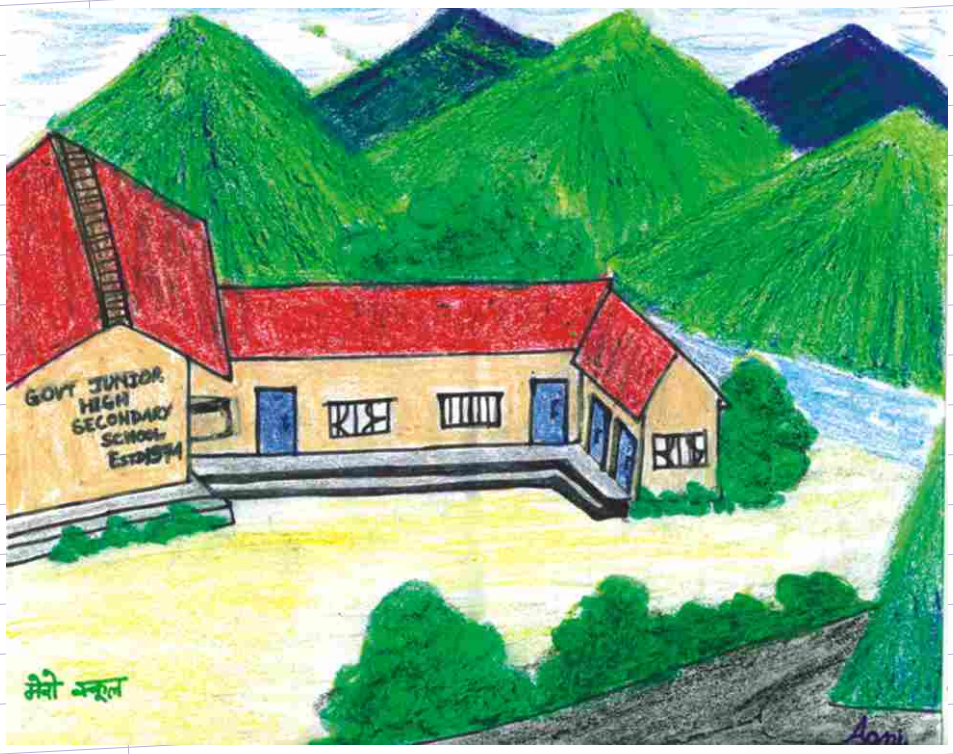


हमारे स्कूल में बहुत सारे कार्यक्रम होते हैं। बाल दिवस पर हमारे टीचर हमारे लिए कई पकवान बनाते हैं जैसे, पुलाव, चिकन, पनीर, दाल आदि। और शिक्षक दिवस पर हम उनके लिए पकवान बनाते हैं। पर्यावरण दिवस पर हम अपने स्कूल कैम्पस में पेड़ लगाते हैं। हमारी मैडम ने बताया था कि आज से तीस साल बाद तक पैट्रोल बचेगा ही नहीं। इसलिए मैं सौरऊर्जा से चलने वाली गाड़ी बनाने के बारे में सोचता हूँ। मेरे कई सारे भूतिया और लेप्चा दोस्त हैं। इनसे मैंने कई नए त्यौहारों के बारे में जाना। भूतिया और लेप्चा ही सबसे पहले सिक्किम में आए थे।

*—अग्निश्वर दासमित्रा, तीसरी, सिक्किम*

# मेरा पन्ना

*— हंसराज मगारे, पाँचवीं, भोपाल*

जब मैं थी एक छोटी-सी बच्ची
खेल रही थी खिलौनों से
मम्मी-पापा देख देखकर
हँसते थे दरवाज़े से
हा, हा, हँसते थे दरवाज़े से।

छुप करके मैं धूल चाटती
दीवारों से सट-सट करके,
नहीं सहारा मिलने पर
मैं गिर जाती थी रो-रोकर के।

जब नानी से सुनी कहानी
खूब हँसी अपने पर मैं
दौड़ गई माँ की गोदी में
सो गई सर रखकर मैं
हाँ सो गई सर रखकर मैं।

*— अपर्णा द्विवेदी, नवीं, अरुणाचल प्रदेश*

## प हे लि याँ

1. राजा है पर बिन कपड़ों के
जंगल-जंगल डोलूँ
डर के मारे
काँप उठे सब
जब अपना मुँह खोलूँ।

2. जिस को पाए उसको काटे
है पूरा हत्यारा
उसको जेल ना फाँसी होती
लगता सबको प्यारा।

3. खाले-खाले खूब मिठाई
तेरे बाबा के हलवाई
कहीं नहीं है तेरा मान
फिर भी बन जाती मेहमान।

*— प्रियंका, चौथी, होशंगाबाद, म. प्र.*

## फूल-फूल में कली-कली में

फूल-फूल में कली-कली में
धीरे-धीरे गली-गली में।
जाने कब खिड़की पर उतरी
घर में घुसी लजाई धूप।

*— प्रस्तुतिः माया, तीसरी, धामीखेड़ा, कानपुर*

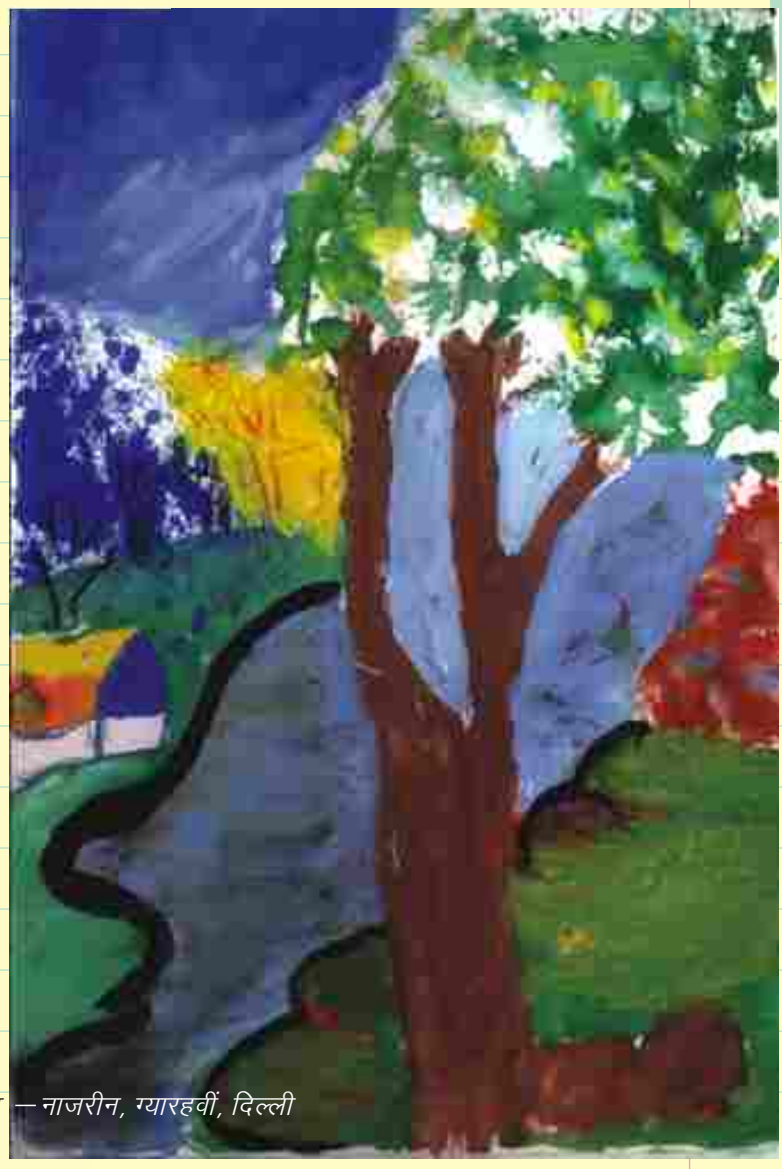

*— नाजरीन, ग्यारहवीं, दिल्ली*

# असली खुशी

दीपावली आने वाली थी। रितु अपने घर में बैठी रंगोली की किताब देख रही थी। वह सोच रही थी कि वह इस बार दीपावली में रंगोली कैसे बनाए। तभी उसकी माँ एक अखबार लेकर आई। उन्होंने रितु को अखबार देते हुए कहा, "देखो बेटा, इस बार ज़्यादा पटाखे मत खरीदना। देखो, पड़ोस के शहर में अभी दो दिन पहले ही बाढ़ आ गई और कितने लोगों के घर तबाह हो गए। कुछ बच्चे तो अनाथ भी हो गए। देखो इस अखबार में सब कुछ लिखा है।" रितु माँ से अखबार लेकर पढ़ने लगी। उसने कुछ छोटे-छोटे बच्चों को भी देखा, वह तो उससे भी छोटे थे। उसने माँ से पूछा कि वे बच्चे इस बार दीवाली नहीं मना पाएँगे ना। वह अपनी माँ से यह सुनकर बहुत दुखी हुई कि उन बच्चों के पास तो खाने को भी कुछ नहीं है। उसने अपनी माँ से कहा कि वह इस बार पटाखे नहीं खरीदेगी और उन पैसों को बाढ़ पीड़ितों को दे देगी। उसकी माँ ने कहा कि इतने पैसों से कुछ नहीं होगा। रितु सोच में पड़ गई कि वह बाढ़ पीड़ितों के लिए क्या करे? तभी उसे एक तरकीब सूझी। उसने एक पुराने डिब्बे को पेंट कर उस पर एक चिट लगा दी जिस पर लिखा था, बाढ़ पीड़ितों के लिए। वह रोज़ पड़ोस में जाकर पैसे इकट्ठा करती थी। दीपावली आने तक उसके पास बहुत पैसे इकट्ठा हो गए। उसने वो पैसे बाढ़ पीड़ितों की मदद करने के लिए भेज दिए। दीपावली के दिन एक डाकिए ने आकर रितु के नाम एक उपहार दिया। जिस पर लिखा था, बाढ़ पीड़ितों की तरफ से रितु के लिए।

— शाहीन, सातवीं, कानपुर

## चुटकुला

पिता - बेटे तुम्हें तीनों पेपर में कितने नम्बर मिले?
बेटा - 300 में से 300
पिता - वो कैसे?
बेटा - पहले में 3 और बाकी दोनों में 0, 0 नम्बर मिले, तो हो गए ना 300।

— नन्दिनी, तीसरी, होशंगाबाद, म.प्र.

# मेरा कुत्ता

मेरा कुत्ता है भूरा
खाना खाता है पूरा।
मिला मुझे मैदान में
खाना ढूँढते हुए।
मैं खेल रही थी एक खेल
जब हुआ हमारा मेल।
ऐसे हुआ हमारा मेल
उसके बाद हमने खेला
मिलकर मस्ती का खेल।

— इसाबेल गुप्ता, चौथी, पुणे, महाराष्ट्र

— रिया वानखेड़े, दूसरी, पुणे, महाराष्ट्र



# मज़े-मज़े से पढ़ते हम

आजकल हमारे स्कूल में हम सभी मज़े-मज़े से पढ़ते हैं। कल की बात है। रितेश एक पतंग लाया और सर पढ़ा रहे थे संचार के साधन। फिर क्या था। उमेश बहुत सारे टेलीफोन, टीवी के चित्र व अखबार लेकर आया और उन्हें कैंची से काटा और चिपका दिया पतंग पर। ऊपर लिख दिया संचार के साधन। फिर मैंने पतंग टाँग दी कक्षा में। आज तो नीलेश, उमेश और राजेश सर के साथ डाकघर गए। और वहाँ से पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय पत्र और लिफाफा खरीद कर लाए। हम सब दोस्तों ने उन्हें देखा और उनके बारे में जाना। बड़ा मज़ा आया।

— मानसी सोनेर, चौथी, धार, म.प्र.

— देवेश शर्मा, चार साल, जोधपुर